A-PDF Image To PDF Demo. Purchase from www.A-PDF.com to remove the watermark

…वरी, मार्च १९२६] "SHISHU" [द्वितीय-तृतीय अङ्क

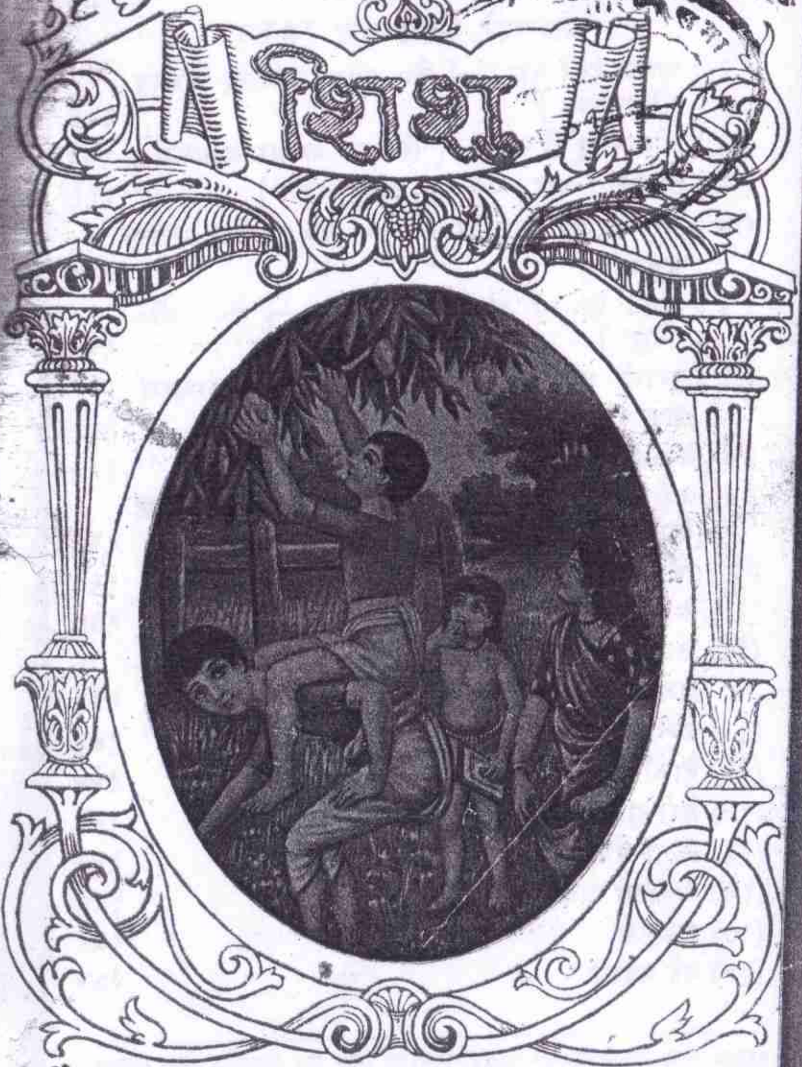

वार्षिक मूल्य २)] सम्पादक [इस अङ्क का ≡)

पण्डित सुदर्शनाचार्य्य बी० ए०
सहायक सम्पादक—श्रीनाथसिंह

Single Copy Three A…

विषय-सूची

फरवरी, मार्च सन् १९२६

(१) बतला दो (पद्य)—[ले०, श्री० आनन्दि प्रसाद श्रीवास्तव्य] १०५
(२) श्रीमान बूँदी नरेश—[ले०, पं० लज्जाराम शर्म्मा] १०६
(३) हरगङ्गा (पद्य)—[ले०, श्री० 'नयन'] ... १११
(४) भगवान की दयालुता—[ले०, पं० द्वारिका प्रसाद चतुर्वेदी] ११६
(५) जगते हो या सोते राम (पद्य)—[ले०, श्री० 'विभु'] १२०
(६) पुरानी पहेलियाँ (पद्य)—[ले०, प्रो० रामदास गौड़ एम० ए०] १२१
(७) नेवला—[ले०, श्री मोहन लाल बी० ए०] ... १२२
(८) वही किताब (पद्य)—[ले०, पं० सोहन लाल द्विवेदी] १२६
(९) बिहारी की बीरता—[ले०, श्री० गोपाल देवी] १२७
(१०) आदर्श (पद्य)—[ले०, पं० लोचन प्रसाद पाण्डेय] १३८
(११) सहारा का रेगिस्तान—[ले०, श्री० बुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०] १३९
(१२) चन्दा बाबू (पद्य)—[ले०, हरिप्रसाद द्विवेदी] ... १४३
(१३) दोनों भाई १४४
(१४) मेरी गुड़िया १४६
(१५) चिट्ठी-चपाती १४७
(१६) अनोखी बातें १५०
(१७) चुटकुले १५१
(१८) नई पहेली १५२

मुद्रक तथा प्रकाशक-पं० सुदर्शनाचार्य्य बी० ए० सुदर्शन प्रेस, प्रयाग।

शिशु

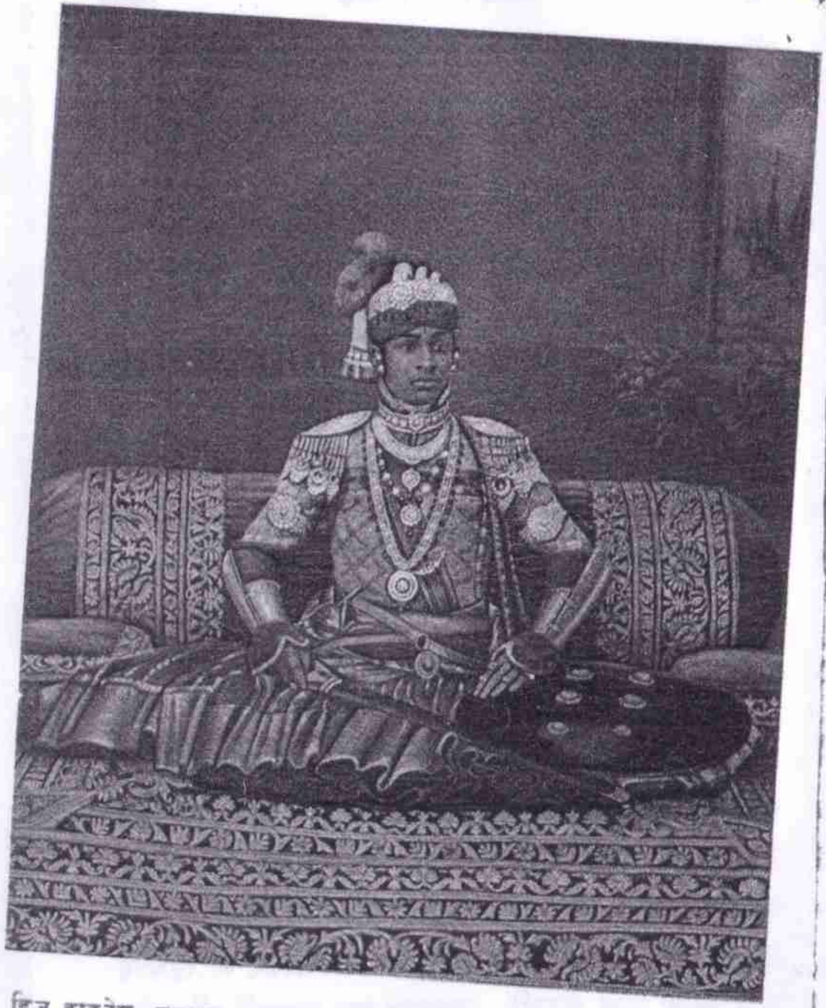

हिज़ हाइनेस महाराव राजा सर रघुबीर सिंह जी साहब बहादुर जी॰ सी॰ एस॰ आई॰, जी॰ सी॰ आई॰ ई॰, जी॰ सी॰ वी॰ ओ॰, बूँदी।

(अपनी किशोरावस्था में)

शिशु

पढ़ो, बढ़ो भारत-सन्तान। हृदय धरो माता का ध्यान॥
तुम हीं पर आशा है सारी। मुख निरखे भारत महतारी॥

११ वर्ष } प्रयाग, फरवरी, मार्च १९२६ { २, ३ अङ्क

बतला दो !

कहते हैं सब यही कि हम में बसते हैं भगवान।
फिर कैसे हम खेला करते अपने से अनजान ?
क्या तुम भी खेला करते हो ऐसे ही हे नाथ !
और हमारे मन के भीतर बस उसके ही साथ॥
हमको भीतर देख पड़ेंगे कब कैसे फिर आप ?
बतला दो, बतला दो, हमने किया न अब तक पाप॥

—आनन्दि प्रसाद श्रीवास्तव्य।

श्रीमान बूंदी-नरेश

बालकों, आज के 'शिशु' में तुम लोग जो चित्र देख रहे हो वह बूंदी नरेश महाराजाधिराज महाराव राजा श्रीमान् सर रघुवीर सिंह जी साहब बहादुर का है। आप को भारत वर्ष की गवर्नमेंट से जी०सी०एस०आई०, जी० सी०आई०ई०, जी०सी०वी०ओ० की पदवी और १७ तोपों की सलामी का सम्मान प्राप्त है। आप २२०० वर्ग मील भूमि में बसने वाली २॥ लाख प्रजा के स्वामी हैं। यह राज्य संवत् १२६८ से स्थापित हुआ है और यहाँ के नरेश स्वधर्म निष्ठा में, वीरता में और अपने राज्य की, अपने धर्म की और स्वदेश की रक्षा के लिये अपना तन, मन और धन अर्पण कर देने के लिए अनेक बार कीर्ति लाभ कर चुके हैं। उन्होंने शिरसारे की खेल कर कभी मुसलमान बाशाहों को अपनी लड़कियाँ नहीं दी। साम्राज्य रक्षा के लिये अनेक बार अपने प्राण संग्राम भूमि में विसर्जन कर देने पर भी कभी हार का नाम नहीं लिया। आप चौहान

वंश की हाड़ा शाखा के शिर मौर हैं। राजपूताना के क्षत्रिय नरेशों में आप का दर्जा बहुत ऊँचा है।

आप बड़े ही मातृ-भक्त हैं। माता की सेवा करने में, माता के आज्ञा-पालन में और माता को प्रसन्न करने में, सदा आपका यही लक्ष्य रहता है कि किसी तरह से श्रीमती माँ जी साहबा का मन मैला न होने पावे। जो सेवा, जो सत्कार एक साधारण मनुष्य से अपनी मा का नहीं हो सकता वह तन, मन और धन से, अंतः कारण से शिर के बल करने को आप सदा तैयार रहते हैं। एक बार आप मोटर में सवार होकर वायु सेवन के लिये जा रहे थे। मार्ग में सामने से आते हुए आपको अपनी माता की सवारी के दर्शन हुए। श्रीमती माँजी साहबा पर्दे के अन्दर पालकी में सवार होकर पधार रहीं थीं। आपने अपनी मोटर ठहराई। सवारी में से नीचे उतर कर माता को रुककर तीन बार मुजरा किया और तब श्रीमती की आज्ञा का संकेत पाकर अपनी मोटर में सवार हुए और जब माजी साहबा का महलों की ओर

पधारना हुआ तब आप रवाना हुए। इतने बड़े राज्य का अधिकार पाकर माता का ऐसा आदर शायद ही किसी रईस में देखा जा सकता है। किन्तु इसके साथ ही आपका यह भी अटल सिद्धान्त है कि जब कोई मुकद्दमा मामला सामने आजावे तो किसी भी अमीर के कारण कोई गरीब न मारा जावे क्योंकि श्रीमान् का यह दृढ़ निश्चय है कि राजा न्याय करने के लिये पैदा होता है। श्रीमान् की माता की भी दयाशीलता, स्वधर्म में आस्तिकता और दान इन प्रान्तों में प्रसिद्ध हैं।

यद्यपि श्री मान् इतने बड़े राज्य के स्वामी हैं किन्तु राजोचित गौरव के सिवाय अभिमान का, अपने को बडा समझने का और अहंकार का आप में लेश मात्र भी नहीं है। राज्य का छोटे से छोटा पद पाकर ओछे आदमी अपने लिये 'मैं' की जगह 'हम' कहने लगते हैं, अपने कथन को अपनी आज्ञा बतलाने में भी नहीं लजाते हैं, किन्तु आप अपने लिये कभी बहु बचन का प्रयोग नहीं करते। प्रसंग आ पड़ने पर यदि कभी दूसरे के कथन

का भी उल्लेख करना पड़े तो आप यह कहेंगे कि—"तुम ने मुझसे कहा था, तू ऐसा करना।" यदि कोई अन्य नरेश इस वाक्य को कहने लगे तो वह अवश्य कहेगा कि "तुमने हमसे अर्ज किया था कि श्रीमान् ऐसा करें—।"

श्रीमान् की सनातन धर्म में पक्की श्रद्धा है। ब्राह्मणों को दान और दीनों का प्रतिपालन, विद्वानों का सत्कार और प्रजा का हित साधन, अपराधी को क्षमा और दया श्रीमान् के साधारण काम हैं।

श्रीमान् को संस्कृत का अच्छा अभ्यास है। सरल रचना अच्छी तरह समझ लेते हैं और हिन्दी पढ़ने में ऐसे सिद्धहस्त हैं कि बुरे से बुरे अक्षर, ग्रामीणों की बिलकुल टूटी फूटी लिपि पढ़ लेने में कभी कमी नहीं रहती। जन साधारण को इससे एक बड़ा लाभ है। लाभ यह है कि केवल अक्षर ज्ञान वाला भी प्रार्थना पत्र श्रीमान् के नाम लिख सकता है और जहाँ लिफाफे पर "खास निगाह" वाक्य लिखा रहता है वहाँ श्रीमान् के सिवाय उसका आशय कोई नहीं जान सकता।

इस तरह यहाँ की प्रजा के लिये अपने हृद्भावों को—अपने दुःख-दर्द को श्रीमान् की सेवा में पहुँचा देने का ऐसा अच्छा साधन है। भारतवर्ष का भूगोलिक नकशा आपको इतना याद है जितना कदाचित् मैट्रीक्यूलेशन परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थी को भी याद न होगा। नकशा चाहे हिन्दी में हो अथवा अंग्रेजी में। श्रीमान् के समक्ष फैला दिया जाय, उसकी दिशाएँ ठीक कर दी जायँ और केवल एक नगर का नाम बतला दिया जाय, बस आप की अंगुली चुपचाप उन नगरों पर पड़ती जायगी। यह आगरा यह दिल्ली, यह काशी और यह कलकत्ता। इसमें कभी ग़लती न होगी। राजपूताने के प्रत्येक रजवाड़े का आपके आश्रित सरदारों या कर्मचारियों के खानदानों की पीढ़ियों का इतिहास आपको कंठ याद है। आपकी बहस करने की शक्ति इतनी बढ़ कर है जितनी अच्छे व्याख्यान दाता की हुआ करती है। दूसरे की तर्क सुनने में कभी आप कुमलाते नहीं हैं और किसी भी व्यक्ति को बना कर बिगाड़ना नहीं जानते। क्षमा शीलता भी श्रीमान् में ऐसे हद दर्जे तक है।

अधिकार पाकर क्षमा करना राजा का भूषण है और सचमुच श्रीमान ऐसे ऐसे सद्गुणों से भूषित होकर बूँदी राज्य सिंहासन की शोभा बढ़ा रहे हैं।

—मेहता लज्जाराम शर्मा।

हरगङ्गा

करो बन्द अब अपना दंगा।
और, सुनो मेरी हरगंगा! हरगंगा!
नदी किनारे छोटा ग्राम।
जिसका कोठीपुर था नाम! हरगंगा!
रहें गाँव में अन्धे चार।
दीन हीन दुखिया लाचार! हरगंगा!
पंचों में यों हुई सलाह।
कीजे अन्धों का निरबाह! हरगंगा!
एक एक दिन हम सब लोग।
घर ले जा लगवा दें भोग! हरगंगा!
पास हो गयी यही सलाह।
अन्धों का हो चला निबाह! हरगंगा!

बैठ बैठ सबकी चौपाल।
अंधे खावें रोटी दाल ! हरगङ्गा !
उसी गाँव में मटरू नाम।
रहते थे पटवारी राम ! हरगङ्गा !
पटवारी होते चालाक।
उनकी होती लम्बी नाक ! हरगङ्गा !
"पटवारी" में अक्षर चार।
लीजे उनका अर्थ विचार ! हरगङ्गा !
'प' से समझो पाजी दूत।
'ट' से समझो टर्रा भूत ! हरगङ्गा !
'व' से समझो बात मरोर।
'र' से समझो रिश्वत खोर ! हरगङ्गा !
आया जब मटरू का रोज।
दिया खूब अन्धों को भोज ! हरगङ्गा !
लालाइन से कहा पुकार।
आज बनै झूँठी ज्यौनार ! हरगङ्गा !
आवेंगे अन्धे वे चार।
ढाई सेर करेंगे पार ! हरगङ्गा !
चूल्हे में दो आग जलाय।
रख दो उलटा तवा जमाय ! हरगङ्गा !

बूंद बूंद पानी टपकाव।
छन्न छन्न का शब्द सुनाव ! हरगङ्गा !
जिससे समझें अन्धे लोग।
आज उड़ेगा मोहन भोग ! हरगङ्गा !
मटरू ऐसा पाठ पढ़ाय।
लाया चारों अन्ध लिवाय ! हरगङ्गा !
पानी लिया धुलाये हाथ।
कुल्ली करवाई विधि साथ ! हरगङ्गा !
आसन डाले चार बिछाय।
बैठाला सब को ले जाय ! हरगङ्गा !
पत्तल डाली सम्मुख चार।
कुल्हड़ जल से भरे सँभार ! हरगङ्गा !
अन्धों ने पाया सुख खूब।
गया कड़ाही में जी डूब ! हरगङ्गा !
पहला अन्धा बोला बात।
आज मिली पूरी खैरात ! हरगङ्गा !
आज उड़ेगा चोखा माल।
जुग जुग जीवो मटरू लाल ! हरगङ्गा !
कायथ होते भक्त अनूप।
मटरू हैं दृष्टान्त स्वरूप ! हरगङ्गा !

फलो फूल कर मटरू लाल।
मनसा पूर्ण करें गोपाल ! हरगङ्गा !
पीछे खड़े खड़े चुपचाप।
मटरू सुनते थे आलाप ! हरगङ्गा !
अन्धों ने सोची थी बात।
लाला गये लेंन खैरात ! हरगङ्गा !
जो था अन्धा बीचो बीच।
पत्तल देख रहा था खींच ! हरगङ्गा !
ऐंठ जोर से उसका कान।
झपत जमाई मटरू तान ! हरगङ्गा !
उड़े बिचारे के औसान।
दूर हुआ पूड़ी का ध्यान ! हरगङ्गा !
आई यही समझ में बात।
ढिग वाले ने मारा हाथ ! हरगङ्गा !
उसके सिर पर रखकर हाथ।
अन्धे ने जड़ दीं दो लात ! हरगङ्गा !
फिर तो चारो में तकरार।
दे पत्तल दे कुल्हड़ मार ! हरगङ्गा !
बीच बीच में मटरू लाल।
मसक तमाँचा दें तत्काल ! हरगङ्गा !

गुस्से में हो कर बेहाल।
चारों गुत्थम गुत्थ निहाल ! हरगङ्गा !
देवें गाली मारें लात।
सुनै न कोई, कोई बात ! हरगङ्गा !
मटरू चुपके घर में जाय।
दौड़ा आँगन को चिल्लाय ! हरगङ्गा !
दावा मार पीट का डाल।
घर से उनको दिया निकाल ! हरगङ्गा !
और कहा सब से ललकार।
यहाँ न आना, ख ब र दा र ! हरगङ्गा !
दुष्टों ! खाकर मुफ़्ती माल।
कुश्ती लड़ो, ठोंक कर ताल ! हरगङ्गा !
भगो बेवकूफ़ो सब दूर।
मटरू हैं तुमसे मजबूर ! हरगङ्गा !
अन्धे चले कुटी को रोय।
पूड़ी और कचौड़ी खोय ! हरगङ्गा !
मटरू का घर करके बन्द।
सब से रोटी पावें अन्ध ! हरगङ्गा !
देखा यह मटरू का ढङ्ग।
बजी खंजड़ी पर हरगङ्ग ! हरगङ्गा !

सुखी रहें माई के लाल।
भिक्षा देउ 'नयन' को डाल! हरगङ्गा!

—'नयन'

भगवान की दयालुता

रूशिया में, हमारे देश भारत से उत्तर की ओर साइबेरिया नाम का एक देश है। जो लोग रूस की अमलदारी में रहते हैं और उन में से जब कोई बड़ा अपराध करता है, तब उसे देश निकाला दिया जाता है। ऐसे देश निकाले की सज़ा पाये हुए अपराधी साइबेरिया देश ही में भेजे जाते हैं। इस देश में अपार ठण्ड पड़ती है। यहाँ तक कि कभी कभी तो बर्फ की आँधियाँ चला करती हैं। बर्फ ऐसी पड़ती है कि देखते देखते बर्फ की पहाड़ जैसी ऊँची ऊँची दीवालें खड़ी हो जाती हैं। जिस तरह भारत के राजपूताने के रेतीले प्रान्तों में अँधड़ों से बालू उड़ उड़ कर टीले बना देती है। उसी तरह साइबेरिया में हवा के झोकों से बर्फ उड़ कर दीवाल खड़ी कर

देती है। कहने काम तलब यह है कि साइबेरिया देश में ठंड बहुत अधिक पड़ती है।

इसी साइबेरिया देश में एक छोटा सा गाँव है। किसी समय उस गाँव के निकास पर एक छोटा सा घर बना हुआ था। उस घर में एक बुढ़िया रहती थी। वह बुढ़िया बहुत बूढ़ी थी और उसने दुनियाँ का बहुत कुछ ऊँच नीच देखा था। बुढ़िया की जीविका का कोई बंधान न था। बुढ़िया के साथ उसकी एक बेटी रहती थी जिसके दो बेटे थे। बुढ़िया और उसकी बेटी दिन भर मेहनत मज़दूरी कर जो पाती, उसी से वे अपना काम चलाती थीं और भगवान का नाम लेती थीं। बुढ़िया को भगवान का पूरा भरोसा था। वह जब सबेरे सोकर उठती तब एक भजन गाती थी। उस भजन का सार यह था कि भगवान बड़े दयालु हैं और वे अपने सेवकों की रक्षा दीवाल उठा कर करते हैं। उसी भजन को सुन बुढ़िया के धेवते अपनी नानी से पूँछते—"नानी! तुम यह अनहोनी बात काहे को कहा करती हो? कभी भगवान को भी ईंट चूना

लेकर दीवाल चुनते किसी ने देखा है ?" उन अबोध बालकों के इन सवालों के जवाब में बुढ़िया यह कह देती कि भगवान में सब कुछ करने की शक्ति है। वह राई को पहाड़ और पहाड़ की राई बना देता है। वह राजा को रङ्क और रङ्क को राजा बनाता है। उसके लिए कोई बात अनहोनी नहीं है। इस पर वे लड़के हँस दिया करते थे।

एक दिन की बात है कि सबेरा होते ही किसी राजा की फ़ौज लूट मार मचाती उस गाँव के पास भी जा निकली। उस सेना के वहाँ पहुँचने के पहिले रात में बड़ी बर्फ़ पड़ी थी और हवा की तेज़ी से बुढ़िया के घर के दरवाजे के ठीक सामने बर्फ़ की दीवाल खड़ी हो गयी थी। जब वह सेना उस गाँव को लूटने को उस गाँव में घुसी तब उसने वह सारा गाँव लूटा और वहाँ के सब घर उजाड़ डाले पर बुढ़िया के घर का दरवाजा ही सिपाहियों को न देख पड़ा। इसलिए बुढ़िया का घर बच गया। सबेरे से लेकर शाम तक बुढ़िया और बुढ़िया के घर वाले अपने घर के भीतर बैठे बैठे सवारों के घोड़ों की टापों को

सुनते रहे और डर के मारे बुढ़िया उन लुटेरों से बचने के लिए भगवान से विनय करती रही।

जब शाम हुई और गाँव वालों का रोना बन्द हुआ तब बुढ़िया ने अपने घर के दरवाज़े के किवाड़ खोले पर उसने देखा कि उसके दरवाजे के सामने बर्फ़ की एक इतनी ऊँची दीवाल खड़ी है कि उससे घर का दरवाजा छिप गया है। भगवान की अपने ऊपर ऐसी दया देख बुढ़िया की आखों से आँसू निकल पड़े और गला भर आया। उसने पहिले तो भगवान को मन ही मन शीश झुकाया। फिर वह घर में जा अपने दोनों पोतों को अपने साथ दरवाजे पर ले आयी और बर्फ़ की दीवाल दिखला उनसे कहा—"बेटो! देखो भगवान् इस तरह दीवाल खड़ी कर अपने सेवकों की रखवाली करते हैं।" उस दिन से उन दोनों बालकों को भगवान पर पूरा भरोसा हो गया और वे भी अपनी नानी की तरह रोज़ सबेरे उठते ही भगवान की महिमा का वह भजन गाने लगे। सचमुच भगवान बड़े दयालु हैं और जो कोई उन पर भरोसा करता है उसकी वे सदा

रखवाली करते हैं। जो कोई दीन हो उनसे दान में जो चीज माँगता है उसे वे माँगी हुई चीज़ देते हैं। दीन होकर और छल कपट छोड़ कर भगवान से कोई चीज माँगने पर माँगने वाले को माँगी हुई चीज़ वे कैसे देते हैं इसकी कथा हम "शिशु" के पढ़ने वाले शिशुओं को फिर कभी सुनावेंगे।

—चतुर्वेदी द्वारिका प्रसाद शर्मा।

जगते हो या सोते राम

मुँह ढक लिया पड़े बिस्तर पर,
जगते हो या सोते राम।
बोलो जी जल्दी बोलो।
खोलो जी मुँह को खोलो॥
रूठ गए हो इसी लिये क्या—
छी छी छी छी रोते राम॥
हुआ फूल कर मुँह कुप्पा।
बने हुए बाबा चुप्पा॥

—'विभु'।

पुरानी पहेलियां

मोती भरा मोम का घड़ा।
उस पर लाल कबूतर खड़ा॥
(मोम बत्ती)

सबजा पेटी काँटे जड़ी।
मुँह तक भरी है चम्पा कली॥
(कटहल)

गहिर कुंड कचनार क घाट।
बत्तिस पीपर एकै पात॥
(मुँह)

हाथी के दाँत पै सबजा छाता।
जो बूझै सो पंडित ज्ञाता॥
(मूली)

एक कुएं में घाट हजार।
एक हजार घुसे पनिहार॥
(चलनी)

तिन तिन मोर की टाँग तर, एक एक हाथी पाँव।
पुंछिया झूलै पीठ पर, पंडित कहिए नाँव॥
(तराजू)

—रामदास गौड़, एम० ए०।

नेवला

नेवले और साँप की लड़ाई देखने लायक होती है। साँप अपना फन काढ़ कर नेवले को काटने के लिए झपटता है, पर नेवला भी बड़ा चालाक और फुर्तीला होता है वह फौरन बगल से कूद कर साँप की पीठ पर चढ़ बैठता है और उसका गला दबा लेता है। कभी कभी यह थप्पड़ों से ही साँप का काम तमाम कर देता है।

आदमी को साँप काट ले तो वह मर जाता है, पर नेवला नहीं मरता। लोग कहते हैं नेवले के शरीर में साँप का ज़हर असर नहीं करता। पर इसका एक कारण यह भी है कि लड़ते समय नेवला अपने घने रोएँ खड़े कर लेता है जिससे साँप के दाँत उसके चमड़े तक नहीं पहुँच पाते। फिर उसका चमड़ा भी इतना मोटा होता है कि साँप के दाँत उसमें आसानी से गड़ नहीं सकते।

कभी कभी यह भी देखने में आता है कि नेवला बहुत घायल हो जाता है, पर चाहे जो हो

[illegible] साँप को बिना मारे नहीं रहता। लड़ते समय

तो उसका यही सिद्धान्त रहता है कि वह साँप को मार भी डाले और उसे कोई चोट भी न आवे।

नेवला बागों में और झाड़ियों में और बस्ती के खंडहरों में अधिक रहता है। यह साँप का

शिकार बहुत करता है और उसका डरावना फन खा जाता है। जब यह साँप नहीं पाता तो चूहों चिड़ियों तथा अन्य छोटे छोटे जानवरों का भी शिकार करता है। मगर पञ्जे गोंठे होने से यह पेड़ पर नहीं चढ़ सकता। इस लिये चिड़ियाँ इससे बची रहती हैं।

हिन्दुस्तान तो नेवले का घर है ही, यह अफ्रीका में भी खूब पाया जाता है। दक्षिण योरुप में भी मिलता है।

कहते हैं एक बार जमैका के टापुओं में चूहों ने बड़ा उपद्रव मचा रखा था। और कोई उपाय न देख कर वहाँ के लोग अपने देश में नेवले ले गये। नतीजा यह हुआ कि तीन ही साल में चूहों का नाश हो गया, एक भी चूहा न रह गया। पर चूहों के बाद नेवले दूसरे पालतू जानवरों चिड़ियों आदि को खाने लगे। इससे जमैका वालों ने नेवलों को अपने देश से निकाल दिया और अब तक वे नेवलों को दूर ही रखना चाहते हैं।

हमारे देश में हर साल करीब बीस हजार आदमी साँपों के काटने से मर जाते हैं, अगर यहाँ नेवले न होते तो मालूम नहीं कितने आदमी मरते। बालको! इसी से तुम जान सकते हो कि नेवला हम लोगों के बड़े काम का जानवर है।

—मोहन लाल बी० ए०।

वही किताब

दूध जलेबी और मिठाई।
फीकी लगती हैं सब भाई॥
वही किताब मँगादे माता।
अब कुछ मुझको नहीं सुहाता॥

दस छोटे छोटे बाबू की।
जिसमें लिखी कहानी मीकी॥
अब मैं वही किताब पढूँगा।
रुपये पैसे आज न लूँगा॥

बिल्ली हाँक रही है गाड़ी।
बिल्ली ही है जुती अगाड़ी॥
मोहन मुझको कब देता है?
रोज अकेले पढ़ लेता है?

वही किताब न जो पाऊँगा।
तो न आज रोटी खाऊँगा॥
माथ नवाऊँ माँ, मैं तुझको!
वही किताब मँगा दे मुझको॥

—सोहनलाल द्विवेदी।

बिहारी की बीरता

एक बहुत ही छोटा लड़का था। उसका नाम बिहारी था। द्वारका में समुद्र के किनारे पर उसका घर था। घर की छत पर बैठ कर वह हमेशा समुद्र की ओर देखा करता था और उसके पार जाने की बात सोचा करता था।

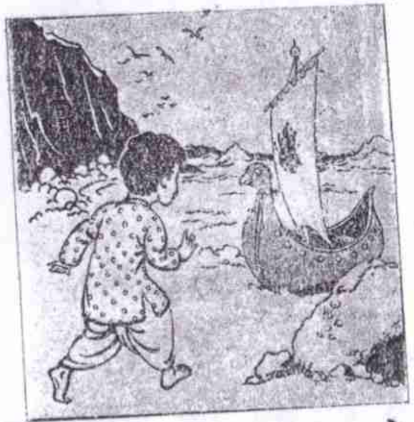

एक दिन जब वह समुद्र के किनारे टहल रहा था, उसे एक छोटा सा जहाज दिखाई पड़ा। इस जहाज की शक्ल चिड़ियों की सी थी, पर इसमें बिहारी के बैठने लायक काफ़ी जगह थी। बिहारी ने मन ही मन कहा—"कैसा! सुन्दर जहाज है, इस पर बैठ कर खेलने में बड़ा मजा आएगा।"

बिहारी उस छोटे जहाज पर बैठ गया।

उसके बैठते ही वह जहाज समुद्र की लहरों को चीरता हुआ एक ओर को चल पड़ा। और थोड़ी ही देर में बिहारी ने देखा कि उसके चारो तरफ़ पानी ही पानी है और कुछ नहीं।

चलते चलते एक छोटा सा टापू मिला। इसी टापू पर वह जहाज इक बारगी आकर खड़ा हो गया। बिहारी जहाज पर से उतरा। उतरते ही उसने देखा कि सामने के मैदान पर उससे भी छोटा एक आदमी खड़ा है और उसकी ओर देख रहा है।

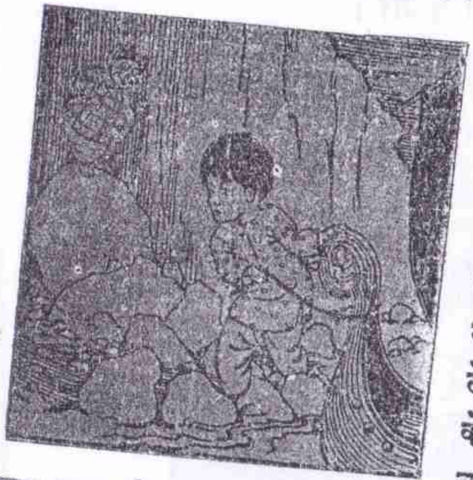

"ओह! आप कौन हैं?" बिहारी बोला।

"मैं मुनगा हूँ। और आप कौन हैं?" उस आदमी ने जवाब दिया।

बिहारी कुछ कहने ही वाला था कि वह

आदमी फिर बोला—"आप बड़े अच्छे आदमी जान पड़ते हैं। चलिये इस टापू के राजा से आप की भेंट करा दूँ।"

दोनों एक तंग और अँधेरी गुफा से होकर चलने लगे। वह गुफा इतनी तंग थी कि बिहारी को बहुत दूर तक घुटनों के बल चलना पड़ा। जब वे गुफा से बाहर निकले तो सफेद संगमरमर की बनी हुई एक बहुत ही सुन्दर बैठक दिखाई पड़ी। इसी बैठक में एक किनारे राजा खड़ा था। उस आदमी ने राजा को झुक कर सलाम की और कहा—"हुजूर! आज मुनगा टापू पर एक बहुत ही अजीब आदमी उतरा है। मैं आपकी सेवा में उसे ले आया हूँ।"

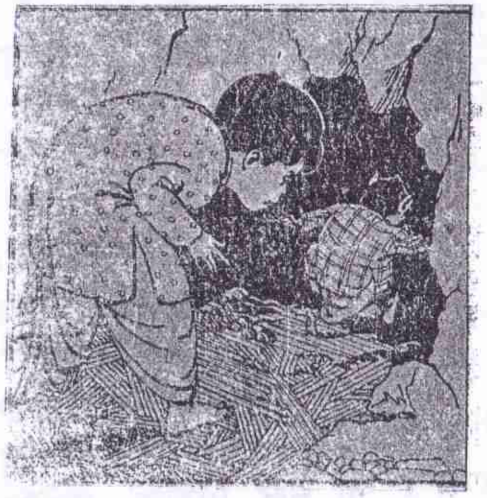

राजा ने बिहारी से पूछा—"तुम मुनगा टापू में क्यों आये हो। क्या तुम नहीं जानते हो कि यहाँ एक बड़ा राक्षस रहता है जिसके मारे हम सब हैरान हैं, वह आधे से ज्यादा

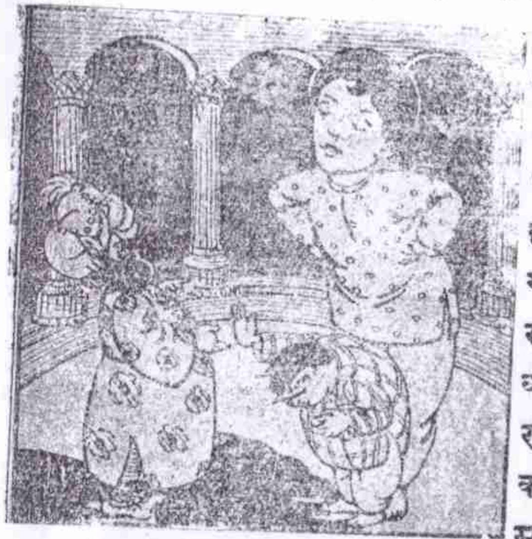

आदमियों को खा चुका है। जान पड़ता है कुछ ही दिनों में यहाँ कोई न रह जायगा क्योंकि उस राक्षस को कोई नहीं मार सकता।"

बिहारी ने जवाब दिया—"शायद मैं उस दुष्ट राक्षस को मार गिराऊँ क्योंकि मैं तुम सारे मुनगों से बहुत बड़ा हूँ।"

यह सुन कर राजा बहुत खुश हुआ उसने बिहारी को एक तलवार दी और कहा—"अगर

तुम उस राक्षस को मार डालोगे तो मैं तुम्हें खूब इनाम दूँगा।"

जो मुनगा बिहारी को राजा के पास लाया था, वह बोला--"मेरे पीछे पीछे आओ। मैं तुम्हें राक्षस का घर दिखा दूँगा।"

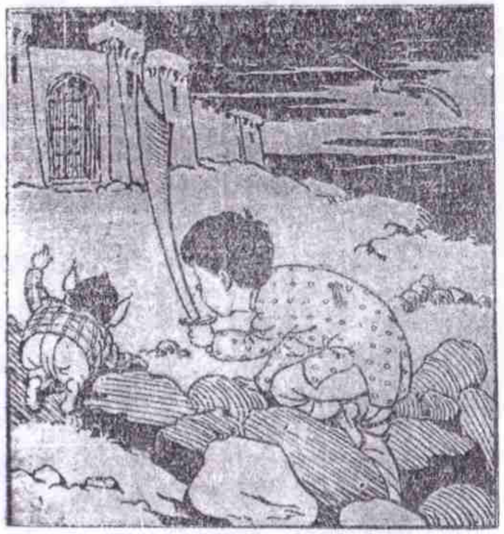

बिहारी उस मुनगे के पीछे पीछे फिर समुद्र के किनारे पर आगया। वहाँ दोनों एक छोटी सी पहाड़ी पर चढ़े। उसी की चोटी पर राक्षस

का महल था। उसने बिहारी को फाटक दिखला दिया। और बोला—"सीधे वहाँ चले जाओ फाटक को जोर जोर से तीन चार बार पैर की ठोकर लगाना। बस, राक्षस बाहर निकल आएगा।"

बालको ! यह सुनते ही हमारा बहादुर बिहारी चल पड़ा। जैसे ही उसने फाटक पर

धक्का दिया वह बिजली की तरह खुल गया।

बिहारी ने भीतर घुस कर देखा राक्षस की बड़ी बड़ी आँखें मोटर कार की लालटेनों की तरह चमक रही हैं और वह मुँह से आग उगल रहा है।

राक्षस के सामने जाना कोई हँसी खेल की

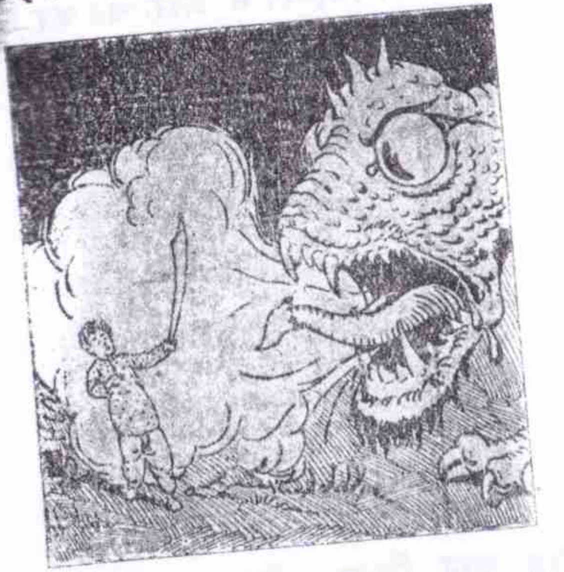

बात नहीं है। पर बिहारी को भुनगा लोगों की जान बचानी थी। इस लिए उसने कड़क कर

कहा--"ओ पापी राक्षस ! सामने आ ! अब तेरी मौत बहुत करीब आ पहुँची ।"

ईश्वर की कृपा से ऐसा ही हुआ क्योंकि बिहारी ने ऐसी कस कर तलवार जमाई कि वह राक्षस जहाँ का तहाँ अपने असली वेश में आकर चित्त लेट गया । बिहारी ने ऊपर चढ़ कर उसका

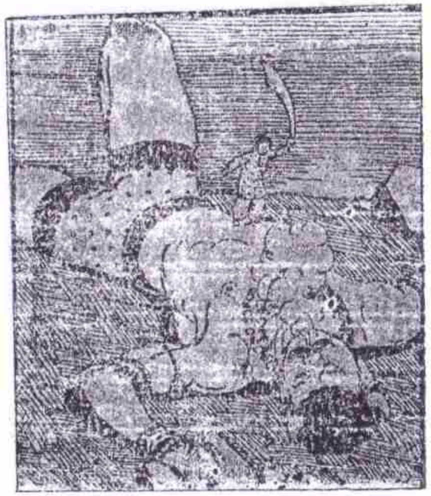

एक हाथ काट लिया और अपनी तलवार घुमाने लगा ।

फिर वह बोला—"खूब ! पापी राक्षस मर गया ।" मुनगा पहाड़ में छिपा यह हाल देख रहा था, वह फौरन भाग कर राजा के पास आया और बोला—"हुजूर ! उस नये बहादुर ने राक्षस का काम तामम कर दिया ।" बात की बात में यह चर्चा चारों तरफ़ फैल गई । मुनगा लोग बिहारी को धन्यवाद देने के लिए दौड़ पड़े ।

राजा भी दौड़ता हुआ आया और बोला—"शाबाश ! बहादुर लड़के ! तुमको सोने की

गिन्नियों से भरे बीस थैले इनाम में दिये गये। बिहारी को इस बात का विश्वास न हुआ था पर राजा ने जो कहा था कर दिखाया।

गिन्नियों के थैले अपने सिरों पर रख रख

कर मुनगा लोग समुद्र के किनारे ले आये। बिहारी ने एक एक करके सबको लदाना शुरु किया।

जब सब लाद चुका तो उसने जहाज खोल

दिया। मुनगा के लोगों ने जयजय कार करके बड़ी धूम धाम से उसे विदा किया।

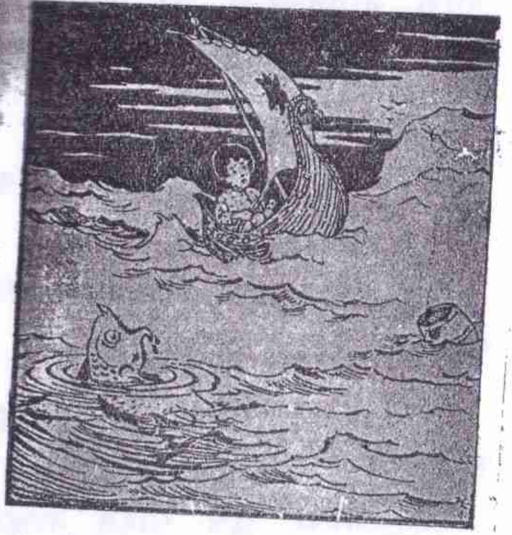

कहते हैं सिर्फ हिम्मत और निडरता के ही कारण बिहारी ने यह बीरता दिखाई और लड़-कपन में ही इतना धन कमा लिया।

—गोपाल देवी।

आदर्श

ए छात्रो ! भारत माता के,
सत्पुत्रों के चरित पढ़ो।
उनके जीवन-साँचे पर तुम,
अपने भावी चरित गढ़ो॥

'गाँधी' जैसी दृढ़ता धारो,
छूटें रिपुओं के छक्के।
'तिलक' समान मनस्वी अपने,
सिद्धान्तों के हो पक्के॥

'मुंशीराम' महात्मा सम तुम,
होवो शिक्षा के आदर्श।
कवि 'रवीन्द्र' सम विश्व प्रेममय,
गावो तुम भारत उत्कर्ष॥

'राशबिहारी' आदिक सम तुम,
धन पा सात्विक दान करो।
'मालवीय' 'दर्भङ्गाधिप' सम,
भिक्षुक बन अभिमान करो॥

चतुर 'मलावारी' सम पीड़ित,
जन-समाज पर प्यार करो।
त्यागी 'लजपत राय' वीर सम,
प्रिय स्वदेश उद्धार करो॥

बूढ़े 'दादा भाई' सम बन,
दुनियाँ में यश फैलाओ।
श्री 'सुरेन्द्र' सम बनो सुवक्ता,
मातृ-भूमि की जय गावो॥

बनो 'विवेकानन्द' मुक्ति–
जिज्ञासु सभ्य संसार करो।
स्वामी 'रामतीर्थ' सम बन कर,
योगी योग प्रचार करो॥

—लोचन प्रसाद पाण्डेय

सहारा का रेगिस्तान

लड़को ! तुमने भारत वर्ष में राजपूताने के 'थार' रेगिस्तान का नाम अवश्य सुना होगा। हम तुम्हें आज एक और रेगि-

स्तान का हाल बताते हैं जो दुनिया में सब बड़ा है यह अफ्रीका महाद्वीप के उत्तर में है और 'सहारा' के नाम से प्रसिद्ध है। इसका क्षेत्रफल सारे योरुप महाद्वीप के बराबर है यहाँ की भूमि ऊँची नीची है। कहीं चौरस मैदान हैं तो कहीं पठार।

पानी तो यहाँ कभी बरसता ही नहीं इसलिये सदा गरम और सूखी हवायें चला करती हैं। दिन को इतनी गरमी पड़ती है कि जिसकी हद नहीं और रात को उतनी ही ज्यादा कड़ाके की सर्दी पड़ती है। क्योंकि बालू में एक खास बात होती है। वह जितनी जल्द जितनी गरम हो जाती है उतनी ही जल्द ठण्डी भी हो जाती है।

वैसे तो इस रेगिस्तान में कोसों तक बालू ही बालू फैली हुई है। किन्तु इसके उत्तरी पश्चिमी भाग में विशेष कर बड़े बड़े बालू के धुस पाये जाते हैं। इनमें से कोई कोई तो ७० से लेकर ३०० फिट तक ऊँचे और लगभग इतने ही

मौजूद हैं। शायद तुम सोचते होगे कि इतनी बालू कहाँ से आजाती है?

कुछ लोगों का मत है कि बहुत पहले किसी जमाने में यहाँ कोई भारी समुद्र रहा होगा। उसी की बालू जमा है। इसके अतिरिक्त एक दूसरी कारण और भी है। अभी हम बता चुके हैं कि यहाँ दिन में बड़ी बेढब गरमी और रात में बड़ी कड़ाके की सर्दी पड़ती है। इससे यहाँ के कंकड़, पत्थर और चट्टानें लगातार गरम और फिर ठण्डी होने से चिटक कर टूटती रहती हैं। यही धीरे धीरे घिस कर अन्त में बालू की शकल में बन जाती हैं।

एक तो एक सिरे से दूसरे सिरे तक बालू, दूसरे पानी कभी बरसता नहीं, तीसरे गरमी पड़ती है बहुत कड़ी। फिर भला खेती बारी यहाँ कैसे हो सकती है। केवल कहीं २ काँटेदार छोटी छोटी झाड़ियाँ उगती हैं। बस!

कहीं कहीं नीची जमीन में पानी के सोते भी पाये जाते हैं। और कहीं कहीं ज़मीन के नीचे भी पानी भरा हुआ होता है, किन्तु ऊपर देखने से

कुछ भी नहीं जान पड़ता। फ्रांसीसी इञ्जीनियरों ने ऐसे स्थानों का पता लगाया है। और वहाँ पर पम्प चला कर उन्होंने पानी ऊपर निकाल दिया है। ऐसी जगहों पर पानी होने के कारण जमीन उपजाऊ बनाली गई है। वहाँ वाले ऐसे स्थानों को 'नखलिस्तान' कहते हैं।

नखलिस्तान में विशेष कर खजूर के पेड़ बहुतायत से होते हैं। कहा जाता है कि खजूर को पूर्ण रूप से फलने फूलने के लिये इसकी जड़ पानी में होनी चाहिये और शिर आग में। वास्तव में सहारा के नखलिस्तान इन दोनों ही बातों को पूरा करते हैं। क्योंकि नीचे पानी होता है और ऊपर झुलसाने वाली गरमी। खजूर वहाँ के लोगों के लिये ऐसा ही उपयोगी है जैसा लङ्का वालों के लिये नारियल। वहाँ वाले खजूर को खाते हैं। फलों को सुखा कर उनके आटे की रोटियाँ भी बनती हैं। पत्तियों और रेशों से टोकरियाँ आदि बनाते और घर छाते हैं। लड़की जलाने आदि के काम आती है। जमीन उपजाऊ होने के कारण यहाँ घास भी

जमती है। थोड़ी बहुत खेती भी होती है। नारंगी, अंगूर, केला अंजीर और कहीं कहीं धान भी पैदा कर लेते हैं। (शेष फिर)

—बुद्धि सागर वर्मा विशारद, बी० ए०।

चन्दा बाबू !

चन्दा बाबू ! आजा रे।
लल्ला तुझे बुलाता है।
दोनों हाथ उठाता है॥
आजा, आजा, आजा रे।
चन्दा बाबू ! आजा रे॥

लल्ला खोवा खाता है।
तुझे बुलाता जाता है॥
खाजा, खाजा, खाजा रे।
चन्दा बाबू ! आजा रे॥

तू है कैसा प्यारा गोला।
लोग तुझे कहते अनमोला॥

अपना भेद बताजा रे।
चन्दा बाबू! आजा रे॥

तेरी है कैसी यह माया।
सब का जी तूने ललचाया॥
शीतल भाव सिखाजा रे।
चन्दा बाबू! आजा रे॥

लल्ला पढ़ता जाता है।
तू भी बढ़ता जाता है॥
अपना पाठ पढ़ा जा रे।
चन्दा बाबू! अजा रे॥

लल्ला गाना गाता है।
और न कुछ भी भाता है॥
तू भी गाजा, गाजा रे।
चन्दा बाबू! आजा रे॥

—हरिप्रसाद द्विवेदी।

दोनो भाई

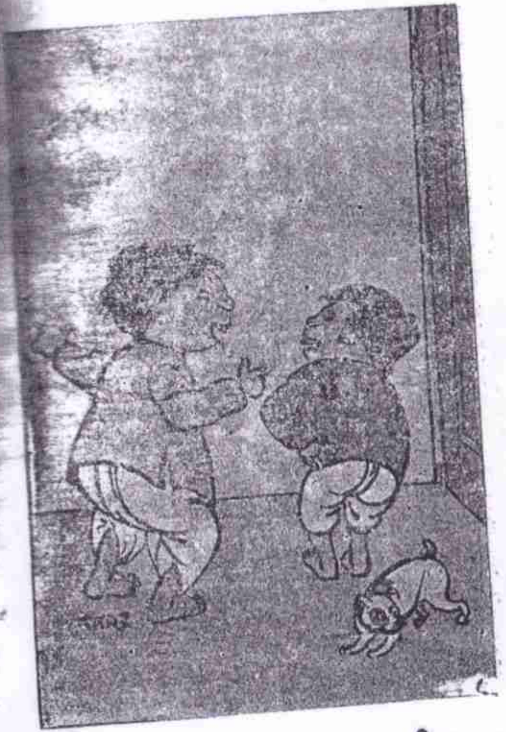

दोनों भाई दोनों भाई।
नाच रहे हैं दोनों भाई॥

मेरी गुड़िया

सम्मुख देखो मुँह मत खोलो।
खड़े रहो औ हिलो न डोलो ॥

[हमारे पास हर महीने बालकों की कुछ ऐसी चिट्ठियाँ आती रहती हैं जिनके पढ़ने में बड़ा मज़ा आता है। ये ही चिट्ठियाँ इस कालम में पाठकों के मनोरञ्जन के लिये छापी जाती हैं। बालक चिट्ठी खूब सोच समझ कर लिखें, क्योंकि चिट्ठियाँ बिलकुल ज्यों की त्यों छापी जाती हैं। कोई भूल होगी तो लोग उन्हीं की हँसी उड़ावेंगे।

—'शिशु'-सम्पादक।]

(१)

श्रीमान् सम्पादक जी,

आगरे में आज कल प्लेग फैल रही है उससे बचने के लिए मैं अपनी बहिन के यहाँ जा रहा हूँ लेकिन आप कोई उपाय हो तो बता दीजिए।

धर्मपाल वर्मा।

[आप बहुत अच्छा कर रहे हैं. शहर छोड़ कर भाग जाना ही प्लेग की सर्वोत्तम दवा है।]

(२)

श्री सम्पादक जी,

मेरा कुत्ता अब पूरा एक साल का होगय[illegible] है और मैं उसकी वर्षगाँठ मनाता हूँ ! इसलि[illegible] चित्र की क्या तजवीज की जाय ?

राजमल छोगा लाल, गौतमपुरा

[एक कहावत है कि जैसा स्वामी होता है वैसा ही उसका सेवक भी होता है। इसके अनुसार तो हम यही कहेंगे कि आ[illegible] अपने प्यारे कुत्ते को तकलीफ न देकर अपना ही चि[illegible] खिंचा लें।]

(३)

प्रिय सम्पादक जी,

आपका "शिशु" देख कर मैं ललचा गया। बाबू जी से मँगाने को कहा तो उन्होंने डाट कर कहा—"चलो फिजूल खर्ची बहुत सूझी है।" मैं रोने लगा। अम्मा ने यह देख कर बाबू जी को डाट कर कहा—"लड़के का मन कभी पूरा किया है कि आज ही करोगे" बात बढ़ गई। दोनों आदमी एक दूसरे से नाराज़ हैं। बाबू जी बैठक में हैं और माँ कोठरी में लेटी है। खाना भी नहीं बना। अब आप बतलाइये कि क्या किया जाय की बाबू जी वगैरः भी खुश हो जायँ और मेरा मतलब भी सधे।

—वीरेश्वर सिंह निहालपुर।

[आप भी एक तरफ लोट जाइये।]

(४)

[illegible] सम्पादक जी

मेरी उमर १० वर्ष की है मुझे सब लोग [illegible] कहते हैं आप का 'शिशु' ११ वर्ष का [illegible] वह तो शिशु ही कहलाता है क्या आप [illegible] कि वह बालक कब कहलाएगा।

मनसुख लाल, गोटेगाँव।

['शिशु' ने दरभङ्गे में 'बालक' के नाम से दूसरा अवतार [illegible] है।]

(५)

[illegible]य जी नमस्ते

मैं बहुत दिनों से आपको खत भेजना [illegible]ता था आज भेज रहा हूँ मेरे बड़े भाई [illegible]मोहन सिंह मिडिल में पढ़ते हैं वह कभी २ [illegible]पका शिशु लाया करते हैं। मदरसे में आता [illegible] मैं उसे बड़े ही चाव से पढ़ता हूँ। उसकी [illegible]सवीरें कहानी मुझे बड़ी प्यारी लगती हैं। मेरे [illegible]स अभी नौ आना हैं। दो रुपये जमा होने पर मैं 'शिशु' जरूर मगाऊँगा। और दूसरे बालकों को इसकी कहानी सुनाया करूँगा मैं आठवें साल में हूँ। मेरी चिट्ठी छाप देना जरूर जरूर।

—मदन मोहन सिंह, नहटौर बिजनौर।

अनोखी बातें

कैलिफोर्निया के सेन्ट रोज नामक स्थान में एक गिरजा घर है। यह सिर्फ एक ही पेड़ की लकड़ी से बना हुआ है। इसमें २०० आदमियों के बैठने की जगह है। जिस पेड़ से यह बना है वह आठ सौ वर्ष पुराना था और उसमें से ७८,००० घन फुट लकड़ी निकली।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

दुनिया में सबसे गरम स्थान कैलिफोर्निया में है। इसका नाम 'मौत की घाटी' है। यह एक ऊबड़ खाबड़ ऊसर मैदान है जो करीब १२ मील चौड़ा डेढ़ सौ मील लम्बा होगा। यहाँ गरमी कभी कभी १६० डिग्री फेहरनहीट तक हो जाती है, जो कि संसार में और कहीं नहीं होती। आधी रात को भी पारा १२० डिग्री से नीचे नहीं उतरता गरमी में वहाँ ऐसी गरमी हो जाती है कि आप यदि किसी पत्थर या लोहे के टुकड़े को छूएँ तो आप का हाथ जल जाय।

—मा० जी०।

चुटकुले

न्यायाधीश—क्यों! ३ साल पहिले भी एक मुकदमे में तू ने अपनी उम्र ३० साल की बताई थी, और आज भी वही बताता है।

मुलजिम—हुजूर! मैं उन आदमियों में से नहीं हूँ जो कल कुछ कहें और आज कुछ।

—नील मणि त्रिपाठी।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

एक कुम्हार का गधा खो गया था। इस पर उसने अपने सब गाँव वालों को दावत दी। दावत खतम हो जाने पर उसके किसी मित्र ने पूछा—आज क्या था जो तुम्हारे यहाँ दावत है।

कुम्हार ने उत्तर दिया—मेरा गधा खो गया है। भगवान की बड़ी कृपा हुई जो मैं उस पर नहीं बैठा था। अगर मैं भी उस पर बैठा होता तो खो जाता।

—प्रह्लाद मिश्र।

नई पहेली

एक बादशाह था। उसके बहुत दुश्मन थे और उसे हमेशा अपनी जान का खतरा बना रहता था। एक बार वह इतना डर गया कि उसने अपने रहने के लिये एक ऐसा कमरा बनवाया जिसके चारों तरफ तीन तीन कोठरियाँ सिपा-

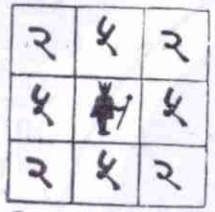

हियों के बैठने के लिये बनीं थीं। वह उसमें रहने लगा और २८ सिपाहियों को हुकुम दिया कि इन कोठरियों में इस प्रकार बैठो कि हर तरफ की लाइन में ६–६ सिपाही हों। बीच में ५–५ और इधर उधर २–२ सिपाही बैठ गये जैसा चित्र में देखने से पता लग जावेगा।

चार रोज बाद ४ सिपाही अपने अफसर से छुट्टी लेने गये। पहले तो उसने आनाकानी की पर बाद को छुट्टी दे दी और बाकी चौबिस सिपाहियों को उन कोठरियों में इस तरह बैठा दिया कि गिनने से हर लाइन में ६ ही रहे।

बालको! बताओ उसने यह कैसे किया?

राजपूत प्रेस, आगरा की शिक्षाजनक और उपयोगी पुस्तकें

...ड़ का इतिहास	१॥)	माता का पुत्री को उपदेश	≡
...ाजीका जीवन चरित्र	॥=)	सती चरित्र का उपदेश	।)
...न्दी महाभारत	२)	सती चरित्र नाटक	।)
...राष्ट्र केशरी शिवाजी	।।)	मेरी दुख गाथा	।)
...देव गोविन्द रानाडे	॥)	गृहस्थ चरित्र	।)
...त महिला मंडन २ भाग	१)	बालशिक्षा २ भाग	।=)
...ी रत्नमाला	।=)	स्मरण शक्ति बढ़ाने के उपाय	।)
...ष्म पितामह	।=)	केसरदेवीजीकोविलायतयात्रा	≡)
...र बालक अभिमन्यु	≡)	सुलक्षणी	≡)
...हात्मा भरत जी	≡)	कृषिसुधार	।)
...र भ्राता लक्ष्मण	≡)	रमणीय रत्न	।)
चरित्र चन्द्रिका	॥)	मार्टिन लूथर	।)
जीवन सुधार	।)	पत्रोपहार	।)
जीवन व्यवहार	।)	रूपवान, बुद्धिमान व बलवान सन्तान उत्पन्न करनेकी विधि	।)
विनोद	।।=)	बालकों का सुधार	।)
विदुषी रत्नमाला	।=)	वायुपान	≡)
ढोरोंकी बीमारी का इलाज	।=	गृहशिक्षा	≡)
स्वामी विवेकानन्द का पत्र व्यवहार	।=)	सर्वहितैषिणी	।)
बालहित	–)॥	बालाबोधनी	≡)
वनिता हितैषिणी	।=)	पत्राहमलिकन	॥)
सुधारक	।)	आदर्श विद्यार्थी	।)

बड़ा सूचीपत्र)। दो पैसे का टिकट भेजने पर मिलेगा।

मैनेजर "राजपूत" प्रेस, आगरा।